चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	11.11.21	4	3-8

खेतीबाड़ी • एचएयू के सायना नेहवाल संस्थान के वैज्ञानिक किसानों को दे रहे सलाह

नवंबर, दिसंबर में प्रो-ट्रे नर्सरी विधि से उगाएं सब्जियां, 120 क्विंटल प्रति एकड़ ले सकते हैं टमाटर की पैदावार

उन्नतशील प्रजातिः टमाटर की हिसार ललित, अरुण और बैंगन की श्यामल, हिसार प्रगति

महबूब अली | हिसार

नवंबर से दिसंबर तक प्रदेश के किसान प्रो-ट्रे नर्सरी विधि से सब्जियों की पैदावार बिना मिट्टी के कर मुनाफा कमा सकते हैं। इस विधि से अधिक पैदावार मिलेगी। फसल के रोग ग्रस्त होने का भी खतरा कम होगा। एचएयू के सायना नेहवाल इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर टेक्नॉलोजी ट्रेनिंग एंड एजूकेशन के सहायक वैज्ञानिक डॉ. देवेंद्र सिंह ने बताया कि प्रो-ट्रे विधि से टमाटर की उन्नत किस्म ललित, अरुण की को उगाकर 100 से लेकर 120 क्विंटल प्रति एकड तक पैदावार पाई जा सकती हैं। इसी तरह बैंगन की हिसार श्यामल, हिसार प्रगति और बीआर 112 किस्म उगाकर 100 से 125 क्विंटल प्रति एकड़, मिर्च की हिसार शक्ति, हिसार विजय किस्म उगाकर 40 से लेकर 50 क्विंटल प्रति एकड़, मटर की अरकल, पीबी 89 किस्म उगाकर 20 से 30 क्विंटल प्रति एकड़, प्याज की हिसार वन, पूसा रेड किस्म उगाकर 100 क्विंटल प्रति एकड़, पालक की एचएस 23, ओलग्रीन, जोबनेर ग्रीन, की किस्म उगाकर प्रति एकड़ 32 से लेकर 40 क्विंटल तक पैदावार पाई जा सकती है। एचएयू के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज का कहना है कि गोष्ठी के माध्यम से भी प्रदेश के किसानों को प्रो-ट्रे नर्सरी विधि के बारे में जानकारी दी जा रही है।

जानिए... प्रो-ट्रे नर्सरी तैयार करने की विधि

प्रो-ट्रे नर्सरी तैयार करने के लिए मिट्टी का इस्तेमाल नहीं किया जाता है । इसमें कोकोपीट, वर्मीकूलाइट, पर लाइट का प्रयोग करते हैं। आरंभ में किसान सिर्फ कोकोपीट में भी प्रो-ट्रे नर्सरी आसानी से तैयार कर सकते हैं। कोको पीट की 1 या 5 किलोग्राम की ईट बाजार में आसानी से उपलब्ध हो जाती है। इस ईट को 7-8 घंटे तक दो से ढाई गुना पानी में भिगोकर रखें और फिर सोलानेसीयस सब्जियों को 98 सेल और कुकर बीट्स को 50 सेल वाली प्रो-ट्रे में बुवाई करें। दस ट्रे को एक के ऊपर एक रखकर (बीच में एक बारीक

प्रो-ट्रे नर्सरी विधि से उगाई गई सब्जियां।

बोर्ड रखें) सफेद पॉलिथीन से ढककर 4 दिन के लिए सुरक्षित स्थान पर रख दें। पांचवें दिन पॉलिथीन हटाकर ट्रे खोल दें और हल्का पानी रोज दें। बाद में मक्खी रोधक जाली के अंदर ट्रे को स्थानांतरित करें। ट्रे को जमीन में न रखकर ऊंचे स्टैंड पर रखें। पंद्रह दिन के बाद घुलनशील खाद सिंचाई वाले पानी के साथ दे सकते हैं। फफूंदी या पौध के जड़ से मरने से बचाने के लिए बेवस्टीन को 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर ड्रेचिंग करें। इस तरीके से नर्सरी कार्य करने से 30-35 दिनों में मिर्च बैंगन, टमाटर आदि की पौध तथा 20-22 दिनों में कद्दू वर्गीय फसलों की नर्सरी तैयार की जा सकती है।

▪ प्रो-ट्रे नर्सरी के लाभ : प्रो-ट्रे में तैयार पौध खेत में तैयार पौध से कई तरह से बेहतर होती है। संरक्षित वातावरण में रोगरहित और उच्चगुणवत्ता वाली पौध तैयार की जा सकती है। इसके अलावा प्रो-ट्रे में बीज का अंकुरण और जमाव अच्छा होता है, जड़ों को पर्याप्त स्थान मिलने से विकास बेहतर होता है। मिट्टी रहित विधि के इस्तेमाल से बहुत सारी बीमारियों, कीटों से बचाव हो जाता है। हम समय से पूर्व भी नर्सरी तैयार कर सकते हैं। ऑफ सीजन सब्जी उत्पादन कर पौध और सब्जी का अच्छा बिक्री मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। रोजगार के रूप भी में प्रो-ट्रे नर्सरी उत्पादन एक लाभकारी व्यवसाय है और थोड़े दिनों में अच्छी आय प्राप्त की जा सकती है।

नर्सरी में इन सब्जियों को उगाया जा सकता हैं

- टमाटर, बैंगन, मिर्च, शिमला मिर्च।
- कद्दूवर्गीय सब्जियों में लौकी, कद्दू, करेला, तरबूज, खरबूजा, ककड़ी
- प्याज व गोभीवर्गीय सब्जियों में फूलगोभी, पत्तागोभी, ब्रोकली आदि।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	12.11.21	5	2-5

एचएयू वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण में फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुंब उत्पादन में उपयोग की दी सलाह

मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन

प्रशिक्षण के दौरान संबोधित करते वैज्ञानिक एवं मौजूद प्रतिभागी।

हिसार, 11 नवम्बर (देवानंद सोनी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। प्रशिक्षण में प्रदेश भर के विभिन्न जिलों के प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण हासिल किया। प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज के दिशा-निर्देश में व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास के मार्गदर्शन में किया गया। इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफ़ेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया क्योंकि हरियाणा प्रांत में कृषि अवशेषों की कोई कमी नहीं है। केवल हरियाणा में लगभग 22 मिलियन टन गेहूं और धान का फसल अवशेष पैदा होता है। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करे तो न केवल किसान की आमदनी में इजाफा होगय बल्कि कुपोषण की समस्या से भी निजात मिलती है। साथ ही प्रदूषण की समस्या भी कम होती है और भूमि की उर्वरक क्षमता में बढ़ोतरी होती है। विश्वविद्यालय द्वारा किसानों तथा बेरोज़गार युवक व युवतियों को मशरूम उत्पादन को कृषि विविधिकरण के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहन किया जा रहा है। वैज्ञानिकों ने बताया कि ढींगरी व दूधिया खुम्बों में भी प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण व अमीनो एसिड इत्यादि प्रचुर मात्र में पाये जाते हैं। इन खुम्बों में भी कई तरह के औषधीय गुण मौजूद होते हैं जो शरीर में होने वाले रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। एचएयू के पौध रोग विभाग की मशरूम तकनीकी प्रयोगशाला में सफ़ेद बटन मशरूम, ढींगरी मशरूम, दूधिया मशरूम इत्यादि का बीज उपलब्ध रहता है और अपनी आवश्यकता के अनुसार ख़रीदा जा सकता है।

लगातार आयोजित किए जा रहे हैं प्रशिक्षण : संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया की इस तरह के प्रशिक्षण लगातार आयोजित किए जा रहे हैं ताकि बेरोजगार युवक-युवतियों को अधिक से अधिक लाभ मिले। उन्होंने बताया कि दिनों-दिन लोगों में जागरूकता बढ़ रही है और बेरोजगार युवक-युवतियां स्वरोजगार स्थापित करने के लिए बेताब हैं। इसी कड़ी में एचएयू से प्रशिक्षण हासिल कर वे स्वरोजगार स्थापित कर स्वावलंबी बनने की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। उन्होंने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित, युवक व युवतियां इसे स्व-रोजगार के रूप में अपना सकते हैं तथा सारा वर्ष मशरूम की विभिन्न प्रजातियों जैसे सफ़ेद बटन मशरूम (अक्तूबर से फरवरी), ढींगरी (मार्च से अप्रैल), दूधिया मशरूम/धान के पुवाल की मशरूम (जुलाई से अक्तूबर) को उगाकर सारा साल मशरूम का उत्पादन किया जा सकता है और स्वावलंबी बना जा सकता है। प्रशिक्षण के आयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि डॉ. राकेश चुघ, डॉ. निर्मल कुमार, डॉ. डी. के. शर्मा, डॉ. भूपेंद्र सिंह, डॉ. मनमोहन ने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम उत्पादन को लेकर महत्वपूर्ण जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	12.11.21	4	1-2

प्रशिक्षण के दौरान संबोधित करते वैज्ञानिक एवं मौजूद प्रतिभागी।

एच.ए.यू. के वैज्ञानिकों ने दिया प्रशिक्षण

'फसल अवशेष जलाने की बजाय खुम्ब उत्पादन में करें उपयोग'

हिसार, 11 नवम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित 3 दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया।

प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के दिशा-निर्देश में व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास के मार्गदर्शन में किया गया। इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया। वैज्ञानिकों का कहना था कि हरियाणा प्रांत में कृषि अवशेषों की कोई कमी नहीं है। केवल हरियाणा में लगभग 22 मिलियन टन गेहूं और धान का फसल अवशेष पैदा होता है। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करे तो न केवल किसान की आमदनी में इजाफा होगय बल्कि कुपोषण की समस्या से भी निजात मिलती है। साथ ही प्रदूषण की समस्या भी कम होती है और भूमि की ऊर्वरक क्षमता में बढ़ौतरी होती है।

संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा, डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि डॉ. राकेश चुघ, डॉ. निर्मल कुमार, डॉ. डी. के. शर्मा, डॉ. भूपेंद्र सिंह, डॉ. मनमोहन ने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम उत्पादन को लेकर महत्वपूर्ण जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	12.11.24	4	1-8

फसल अवशेष का प्रयोग खुंब उत्पादन में करने दी सलाह

शिविर

- मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर प्रशिक्षण का समापन
- किसानों से अवशेष न जलाने की अपील की

जागरण संवददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विवि के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। प्रशिक्षण का आयोजन कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज के दिशा-निर्देश में व विस्तार शिक्षा निदेशक डा. रामनिवास के मार्गदर्शन में किया गया। इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करें तो न केवल किसान की आमदनी में इजाफा होगा, बल्कि कुपोषण की समस्या से भी निजात मिलती है।

खुंब में यह पाए जाते हैं पोषक तत्व : विज्ञानियों ने बताया कि ढींगरी व दूधिया खुंबों में भी प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण व अमीनो एसिड इत्यादि प्रचुर मात्र में पाये जाते हैं। इन खुंबों में भी कई तरह के औषधीय गुण मौजूद होते हैं जो शरीर में होने वाले रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। एचएयू के पौध रोग विभाग की मशरूम तकनीकी प्रयोगशाला में सफ़ेद बटन मशरूम, ढींगरी मशरूम, दूधिया मशरूम इत्यादि का बीज उपलब्ध रहता है और आवश्यकता के अनुसार खरीदा जा सकता है।

लगातार आयोजित किए जा रहे हैं प्रशिक्षण

संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डा. अशोक कुमार गोदारा ने बताया की प्रशिक्षण लगातार आयोजित किए जा रहे हैं ताकि बेरोजगार युवक-युवतियों को अधिक से अधिक लाभ मिले। उन्होंने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित, युवक व युवतियां इसे स्व-रोजगार के रूप में अपना सकते हैं। प्रशिक्षण के आयोजक डा. सतीश कुमार ने बताया कि डा. राकेश चुघ, डा. निर्मल कुमार, डा. डीके शर्मा, डा. भूपेंद्र सिंह मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	12.11.21	3	1

फसल अवशेषों को जलाने के बजाय खुंब उत्पादन में करें यूज

हिसार | एचएयू के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। वैज्ञानिकों ने सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए जागरूक किया। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने के बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करे तो न केवल किसान की आमदनी में इजाफा होगा बल्कि कुपोषण की समस्या से भी निजात मिलती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल–पल न्यूज	11.11. 2021		

सार समाचार

एचएयू वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण में फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुंब उत्पादन में उपयोग की दी सलाह

पल पल न्यूज: हिसार, 11 नवंबर (मनमोहन शर्मा)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। प्रशिक्षण में प्रदेश भर के विभिन्न जिलों के प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण हासिल किया। प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज के दिशा-निर्देश में व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास के मार्गदर्शन में किया गया। इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया क्योंकि हरियाणा प्रांत में कृषि अवशेषों की कोई कमी नहीं है। केवल हरियाणा में लगभग 22 मिलियन टन गेहूं और धान का फसल अवशेष पैदा होता है। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करे तो न केवल किसान की आमदनी में इजाफा होगय बल्कि कुपोषण की समस्या से भी निजात मिलती है। साथ ही प्रदूषण की समस्या भी कम होती है और भूमि की उर्वरक क्षमता में बढ़ोतरी होती है। विश्वविद्यालय द्वारा किसानों तथा बेरोजगार युवक व युवतियों को मशरूम उत्पादन को कृषि विविधिकरण के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहन किया जा रहा है। वैज्ञानिकों ने बताया कि ढींगरी व दूधिया खुम्बों में भी प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण व अमीनो एसिड इत्यादि प्रचुर मात्र में पाये जाते हैं। इन खुम्बों में भी कई तरह के औषधीय गुण मौजूद होते हैं जो शरीर में होने वाले रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। एचएयू के पौध रोग विभाग की मशरूम तकनीकी प्रयोगशाला में सफेद बटन मशरूम, ढींगरी मशरूम, दूधिया मशरूम इत्यादि का बीज उपलब्ध रहता है और अपनी आवश्यकता के अनुसार खरीदा जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	11.11. 2021		

मशरूम उत्पादन में फसल अवशेष का करें इस्तेमाल : वैज्ञानिक

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया।। इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया क्योंकि हरियाणा प्रांत में कृषि अवशेषों की कोई कमी नहीं है। केवल हरियाणा में लगभग 22 मिलियन टन गेहूं और धान का फसल अवशेष पैदा होता है। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करें तो न केवल किसान की आमदनी में इजाफा होगा बल्कि कुपोषण की समस्या से भी निजात मिलती है। साथ ही प्रदूषण की समस्या भी कम होती है और भूमि की उर्वरक क्षमता में बढ़ोतरी होती है। विश्वविद्यालय द्वारा किसानों तथा बेरोजगार युवक व युवतियों को मशरूम उत्पादन को कृषि विविधिकरण के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहन दिया जा रहा है। वैज्ञानिकों ने बताया कि ढींगरी व दूधिया खुम्बों में भी प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण व अमीनो एसिड इत्यादि प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। इन खुम्बों में भी कई तरह के औषधीय गुण मौजूद होते हैं जो शरीर में होने वाले रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। एचएयू के पौध रोग विभाग की मशरूम तकनीकी प्रयोगशाला में सफेद बटन मशरूम, ढींगरी मशरूम, दूधिया मशरूम इत्यादि का बीज उपलब्ध रहता है और अपनी आवश्यकता के अनुसार खरीदा जा सकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	11.11.21		--

एचएयू में मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण में वैज्ञानिकों ने दी सलाह

फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुंब उत्पादन में उपयोग करें

पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। प्रशिक्षण में प्रदेश भर के विभिन्न जिलों के प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण हासिल किया। प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज के दिशा-निर्देश में व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास के मार्गदर्शन में किया गया।

इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफ़ेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया क्योंकि हरियाणा प्रांत में कृषि अवशेषों की कोई कमी नहीं है। केवल हरियाणा में लगभग 22 मिलियन टन गेहूं और धान का फसल

अवशेष पैदा होता है। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करें तो न केवल किसान की आमदनी में इजाफा होगय बल्कि कृपोषण की समस्या से भी निजात मिलती है। साथ ही प्रदूषण की समस्या भी कम होती है और भूमि की उर्वरक क्षमता में बढ़ोतरी होती है। विश्वविद्यालय द्वारा किसानों तथा बेरोजगार युवक व युवतियों को मशरूम उत्पादन को कृषि विविधिकरण के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहन किया जा रहा है। वैज्ञानिकों ने बताया कि ढींगरी व दूधिया खुम्बों में भी प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण व अमीनो एसिड इत्यादि प्रचुर मात्र में पाये जाते हैं। इन खुम्बों में भी कई तरह के औषधीय गुण मौजूद होते हैं जो शरीर में होने वाले रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। एचएयू के पौध रोग विभाग की मशरूम तकनीकी प्रयोगशाला में सफ़ेद बटन मशरूम, ढींगरी मशरूम, दूधिया मशरूम इत्यादि का बीज उपलब्ध रहता है और अपनी आवश्कता के अनुसार खरीदा जा सकता है।

लगातार आयोजित किए जा रहे हैं प्रशिक्षण

संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया की इस तरह के प्रशिक्षण लगातार आयोजित किए जा रहे हैं ताकि बेरोजगार युवक-युवतियों को अधिक से अधिक लाभ मिले। उन्होंने बताया कि दिनों-दिन लोगों में जागरूकता बढ़ रही है और बेरोजगार युवक-युवतियां स्वरोजगार स्थापित करने के लिए बेताब हैं। इसी कड़ी में एचएयू से प्रशिक्षण हासिल कर वे स्वरोजगार स्थापित कर स्वावलंबी बनने की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं।

उन्होंने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित, युवक व युवतियां इसे स्व-रोजगार के रूप में अपना सकते हैं तथा सारा वर्ष मशरूम की विभिन्न प्रजातियों जैसे सफ़ेद बटन मशरूम (अक्टूबर से फरवरी), ढींगरी (मार्च से अप्रैल), दूधिया मशरूम/धान के पुवाल की मशरूम (जुलाई से अक्टूबर) को उगाकर सारा साल मशरूम का उत्पादन किया जा सकता है और स्वावलंबी बना जा सकता है। प्रशिक्षण के आयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि डॉ. राकेश चुघ, डॉ. निर्मल कुमार, डॉ. डी. के. शर्मा, डॉ. भूपेंद्र सिंह, डॉ. मनमोहन ने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम उत्पादन को लेकर महत्वपूर्ण जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	11.11.21		

pppppppp

समस्त हरियाणा — ब्रहस्पतिवार, 11 नवम्बर, 2021 — हिसार

एचएयू वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण में फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम खुंब उत्पादन में उपयोग की दी सलाह

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। प्रशिक्षण में प्रदेश भर के विभिन्न जिलों के प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण हासिल किया। प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज के दिशा-निर्देश में व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास के मार्गदर्शन में किया गया। इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया क्योंकि हरियाणा प्रांत में कृषि अवशेषों की कोई कमी नहीं है। केवल हरियाणा में लगभग 22 मिलियन टन गेहूं और धान का फसल अवशेष पैदा होता है। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करे तो न केवल किसान की आमदनी में इजाफा होगय बल्कि कुपोषण की समस्या से भी निजात मिलती है। साथ ही प्रदूषण की समस्या भी कम होती है और भूमि की उर्वरक क्षमता में बढ़ोतरी होती है। विश्वविद्यालय द्वारा किसानों तथा बेरोजगार युवक व युवतियों को मशरूम उत्पादन को कृषि विविधिकरण के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहन किया जा रहा है। वैज्ञानिकों ने बताया कि ढींगरी व दूधिया खुम्बों में भी प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण व अमीनो एसिड इत्यादि प्रचुर मात्र में पाये जाते हैं। इन खुम्बों में भी कई तरह के औषधीय गुण मौजूद होते हैं जो शरीर में होने वाले रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। एचएयू के पीध रोग विभाग की मशरूम तकनीकी प्रयोगशाला में सफेद बटन मशरूम, ढींगरी मशरूम, दूधिया मशरूम इत्यादि का बीज उपलब्ध रहता है और अपनी आवश्यकता के अनुसार खरीदा जा सकता है।

लगातार आयोजित किए जा रहे हैं प्रशिक्षण

संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया की इस तरह के प्रशिक्षण लगातार आयोजित किए जा रहे हैं ताकि बेरोजगार युवक-युवतियों को अधिक से अधिक लाभ मिले। उन्होंने बताया कि दिनों-दिन लोगों में जागरूकता बढ़ रही है और बेरोजगार युवक-युवतियां स्वरोजगार स्थापित करने के लिए बेताब हैं। इसी कड़ी में एचएयू से प्रशिक्षण हासिल कर ये स्वरोजगार स्थापित कर स्वावलंबी बनने की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। उन्होंने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित, युवक व युवतियां इसे स्व-रोजगार के रूप में अपना सकते हैं तथा सारा वर्ष मशरूम की विभिन्न प्रजातियों जैसे सफेद बटन मशरूम (अक्टूबर से फरवरी), ढींगरी (मार्च से अप्रैल), दूधिया मशरूम/धान के पुवाल की मशरूम (जुलाई से अक्टूबर) को उगाकर सारा साल मशरूम का उत्पादन किया जा सकता है और स्वावलंबी बना जा सकता है। प्रशिक्षण के आयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि डॉ. राकेश चुघ, डॉ. निर्मल कुमार, डॉ. डी. के. शर्मा, डॉ. भूपेंद्र सिंह, डॉ. मनमोहन ने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम उत्पादन की लेकर महत्वपूर्ण जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	11.11.21	--	--

मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर प्रशिक्षण का समापन

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। प्रशिक्षण में प्रदेश भर के विभिन्न जिलों के प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण हासिल किया। इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया क्योंकि हरियाणा प्रांत में कृषि अवशेषों की कोई कमी नहीं है। वैज्ञानिकों ने बताया कि ढींगरी व दूधिया खुम्बों में भी प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण व अमीनो एसिड इत्यादि प्रचूर मात्र में पाये जाते हैं। प्रशिक्षण संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया की इस तरह के प्रशिक्षण लगातार आयोजित किए जा रहे हैं ताकि बेरोजगार युवक-युवतियों को अधिक से अधिक लाभ मिले।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	11.11. 2021		

एचएयू वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण में फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुंब उत्पादन में उपयोग की दी सलाह

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। प्रशिक्षण में प्रदेश भर के विभिन्न जिलों के प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण हासिल किया। प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज के दिशा-निर्देश में व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास के मार्गदर्शन में किया गया। इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफ़ेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया क्योंकि हरियाणा प्रांत में कृषि अवशेषों की कोई कमी नहीं है। केवल हरियाणा में लगभग 22 मिलियन टन गेहूं और धान का फसल अवशेष पैदा होता है। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करे तो न केवल किसान की आमदनी में इजाफा होगय बल्कि कुपोषण की समस्या से भी निजात मिलती है। साथ ही प्रदूषण की समस्या भी कम होती है और भूमि की उर्वरक क्षमता में बढ़ोतरी होती है। विश्वविद्यालय द्वारा किसानों तथा बेरोजगार युवक व युवतियों को मशरूम उत्पादन को कृषि विविधिकरण के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहन किया जा रहा है। वैज्ञानिकों ने बताया कि ढींगरी व दूधिया खुम्बों में भी प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण व अमीनो एसिड इत्यादि प्रचुर मात्र में पाये जाते हैं। इन खुम्बों में भी कई तरह के औषधीय गुण मौजूद होते हैं जो शरीर में होने वाले रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। एचएयू के पौध रोग विभाग की मशरूम तकनीकी प्रयोगशाला में सफ़ेद बटन मशरूम, ढींगरी मशरूम, दूधिया मशरूम इत्यादि का बीज उपलब्ध रहता है और अपनी आवश्यकता के अनुसार खरीदा जा सकता है। लगातार आयोजित किए जा रहे हैं प्रशिक्षण

मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
टूडे हिसार	11.11. 2021		

एचएयू वैज्ञानिकों ने प्रशिक्षण में फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खुंब उत्पादन में उपयोग की दी सलाह

मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का समापन

टुडे न्यूज़ । हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण एवं शिक्षा संस्थान द्वारा आयोजित तीन दिवसीय मशरूम उत्पादन तकनीक विषय पर आयोजित प्रशिक्षण संपन्न हो गया। प्रशिक्षण में प्रदेश भर के विभिन्न जिलों के प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण हासिल किया। प्रशिक्षण का आयोजन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज के दिशा-निर्देश में व विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास के मार्गदर्शन में किया गया। इस दौरान वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को सफेद बटन मशरूम के अलावा दूसरी मशरूम की प्रजातियों को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक किया गया क्योंकि हरियाणा प्रांत में कृषि अवशेषों की कोई कमी नहीं है। केवल हरियाणा में लगभग 22 मिलियन टन गेहूं और धान का फसल अवशेष पैदा होता है। किसान अगर फसल अवशेषों को जलाने की बजाय मशरूम उत्पादन में प्रयोग करे तो न केवल किसान की आमदनी में इजाफा होगा बल्कि कुपोषण की समस्या से भी निजात मिलती है। साथ ही प्रदूषण की समस्या भी कम होती है और भूमि की उर्वरक क्षमता में बढ़ोतरी होती है। विश्वविद्यालय द्वारा किसानों तथा बेरोजगार युवक व युवतियों को मशरूम उत्पादन को कृषि विविधिकरण के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहन किया जा रहा है।

प्रशिक्षण के दौरान संबोधित करते वैज्ञानिक एवं मौजूद प्रतिभागी।

वैज्ञानिकों ने बताया कि ढींगरी व दूधिया खुम्बों में भी प्रोटीन, विटामिन, खनिज लवण व अमीनो एसिड इत्यादि प्रचुर मात्र में पाये जाते हैं। इन खुम्बों में भी कई तरह के औषधीय गुण मौजूद होते हैं जो शरीर में होने वाले रोगों के प्रति रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। एचएयू के पौध रोग विभाग की मशरूम तकनीकी प्रयोगशाला में सफ़ेद बटन मशरूम, ढींगरी मशरूम, दूधिया मशरूम इत्यादि का बीज उपलब्ध रहता है और अपनी आवश्यकता के अनुसार खरीदा जा सकता है।

लगातार आयोजित किए जा रहे हैं प्रशिक्षण

संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक कुमार गोदारा ने बताया की इस तरह के प्रशिक्षण लगातार आयोजित किए जा रहे हैं ताकि बेरोजगार युवक-युवतियों को अधिक से अधिक लाभ मिले। उन्होंने बताया कि दिनों-दिन लोगों में जागरूकता बढ़ रही है और बेरोजगार युवक-युवतियां स्वरोजगार स्थापित करने के लिए बेताब हैं। इसी कड़ी में एचएयू से प्रशिक्षण हासिल कर वे स्वरोजगार स्थापित कर स्वावलंबी बनने की दिशा में कदम बढ़ा रहे हैं। उन्होंने बताया कि मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जिसे भूमिहीन, शिक्षित एवं अशिक्षित, युवक व युवतियां इसे स्व-रोजगार के रूप में अपना सकते हैं तथा सारा वर्ष मशरूम की विभिन्न प्रजातियों जैसे सफ़ेद बटन मशरूम (अक्टूबर से फरवरी), ढींगरी (मार्च से अप्रैल), दूधिया मशरूम/धान के पुवाल की मशरूम (जुलाई से अक्टूबर) को उगाकर सारा साल मशरूम का उत्पादन किया जा सकता है और स्वावलंबी बना जा सकता है। प्रशिक्षण के आयोजक डॉ. सतीश कुमार ने बताया कि डॉ. राकेश चुघ, डॉ. निर्मल कुमार, डॉ. डी. के. शर्मा, डॉ. भूपेंद्र सिंह, डॉ. मनमोहन ने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम उत्पादन को लेकर महत्वपूर्ण जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	11.11.21	3	6

एचएयू में होने वाला दीक्षांत समारोह स्थगित

हिसार | एचएयू में होने वाला 25वां दीक्षांत समारोह स्थगित कर दिया गया है। आगामी 17 नवंबर को दीक्षांत समारोह होना था। विवि प्रशासन भी समारोह की तैयारियों में जुटा हुआ था। पिछले छह साल से किसी कारणवशः एचएयू का 25वां दीक्षांत समारोह नहीं मनाया जा सका था। विवि प्रशासन ने 17 नवंबर को दीक्षांत समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया था। विवि सूत्रों के अनुसार किसी कारणवशः दीक्षांत समारोह को अभी स्थगित कर दिया गया है। आगामी तारीख अभी तय नहीं की गई है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	12.11.21	2	1

विश्वविद्यालयों की स्वायतता पर हमला नहीं होने देंगे

जासं, हिसार: हरियाणा कृषि विवि के गैर शिक्षक संघ के कार्यालय में आल हरियाणा यूनिवर्सिटीज एम्पलाइज फेडरेशन के चेयरमैन एवं लुवासन्टिया प्रधान दयानंद सोनी की अध्यक्षता में बैठक हुई। इस बैठक में हौटा के प्रधान डा. पीके चहल, लुवास्टा के प्रधान डा. अशोक मलिक एवं हौंटिया के प्रधान दिनेश राड ने विचार रखे। जिसमें हरियाणा सरकार द्वारा विश्वविद्यालयों की क्लास-2 एवं ग्रुप सी एंड डी की भर्ती अपने हाथों में लेने तथा कच्चे कर्मचारियों को लगाने की पावर भी हरियाणा सरकार द्वारा अपने हाथों में लेने के विरोध में रखे तथा कड़ा विरोध करते हुए सरकार को चेताया। दयानंद सोनी ने बताया कि सरकार विश्वविद्यालयों की स्वायतता बिल्कुल खत्म करने की कोशिश कर रही है।